Aethel Research Digest Juncture: An International Journal
ISSN (Online): Applied For
Vol. 2, Issue 1, January- February 2026
Received: 19/01/2026 Revised: 03/02/2026
Accepted: 13/02/2026 Published:05/04/2026

सोशल मीडिया और हिंदी भाषा: परिवर्तन, चुनौतियाँ और भविष्य

प्रा. अन्विंक मुन्सी
शोधार्थी, हिंदी विभाग, मानविकी संकाय, पांडिचेरी विश्वविद्यालय,
पुदुच्चेरी, भारत Email. anvikmunsi487@gmail.com

सारांश

डिजिटल युग में सोशल मीडिया संचार का सबसे प्रभावशाली और संवादात्मक माध्यम बन गया है। फेसबुक, एक्स (ट्विटर), इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप और यूट्यूब जैसे प्लेटफॉर्मों ने न केवल सूचना के आदान-प्रदान को सरल बनाया है, बल्कि भाषा के स्वरूप, शैली और प्रयोग को भी गहराई से प्रभावित किया है। हिंदी भाषा, जो भारत की प्रमुख संपर्क भाषा है, सोशल मीडिया के माध्यम से वैश्विक मंच पर पहुँच चुकी है। इस शोधपत्र का उद्देश्य यह अध्ययन करना है कि सोशल मीडिया ने हिंदी भाषा को किस प्रकार प्रभावित किया है, किस तरह के भाषायी परिवर्तन सामने आए हैं, देवनागरी लिपि के समक्ष कौन-सी चुनौतियाँ उत्पन्न हुई हैं तथा डिजिटल युग में हिंदी के भविष्य की संभावनाएँ क्या हैं। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि सोशल मीडिया ने जहाँ एक ओर हिंदी के प्रचार-प्रसार को तीव्र किया है, वहीं दूसरी ओर उसकी शुद्धता, व्याकरण और मानकीकरण को लेकर नई समस्याएँ भी उत्पन्न की हैं।

***(मुख्य शब्द:** सोशल मीडिया, हिंदी भाषा, हिंग्लिश, देवनागरी लिपि, भाषायी परिवर्तन, डिजिटल संचार)*

१. प्रस्तावना:

मानव समाज की पहचान और संस्कृति की वाहक भाषा होती है। विचार, भावना और परंपरा का संवाहक और संवाद का माध्यम भाषा है। समय-समय पर समाज और तकनीक के कारण साथ भाषा में परिवर्तन होना स्वाभाविक प्रक्रिया है। २१वीं सदी में इंटरनेट और सोशल मीडिया ने सूचना और प्रौद्योगिकी क्षेत्र मे क्रांति कि है! इस क्रांति का सबसे प्रभावशाली केंद्र 'सोशल मीडिया' रहा है। आज फेसबुक, व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम, एक्स (ट्विटर) और यूट्यूब जैसे माध्यम समज मे अधिक प्रभावित होते जा राहे है! इस मंचों ने न केवल सूचनाओं के आदान-प्रदान के तरीके को बदला है, बल्कि हमारी अभिव्यक्ति के सबसे सशक्त माध्यम— भाषा को भी पूरी तरह से रूपांतरित कर दिया है। आज सोशल मीडिया ने संचार की गति तीव्र की है और सीमाएँ लगभग समाप्त हो चुकी हैं। सोशल मीडिया मंच केवल निजी संवाद तक सीमित नहीं रहे, बल्कि वे सामाजिक विमर्श, राजनीतिक चर्चा, सांस्कृतिक अभिव्यक्ति और शैक्षणिक संवाद के मंच बन गए हैं।

हिंदी भाषा, जो करोड़ों लोगों की मातृभाषा और संपर्क भाषा है और विश्व की तीसरी सबसे बड़ी बोली जाने वाली भाषा है! हिंदी भाषा आज सोशल मीडिया के कारण नए रूपों में सामने आ रही है। पहले जहाँ हिंदी का प्रयोग मुख्यतः साहित्य, पत्र-पत्रिकाओं और औपचारिक लेखन में होता था, वहीं अब यह चैट, पोस्ट, मीम, वीडियो और टिप्पणियों के माध्यम से आम जनता की भाषा बन चुकी है। सोशल मीडिया पर हिंदी का प्रयोग अब केवल सूचना तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक नई सांस्कृतिक पहचान और भाषाई शैली के रूप में उभर रहा है। यह परिवर्तन हिंदी भाषा के लिए एक अवसर भी है और चुनौती भी। अवसर इसलिए कि हिंदी को वैश्विक मंच मिला है और चुनौती इसलिए कि भाषा की शुद्धता, लिपि और व्याकरण पर प्रश्नचिह्न खड़े हो रहे हैं।

इस शोधपत्र का उद्देश्य यह अध्ययन करना है कि सोशल मीडिया ने हिंदी भाषा को किस प्रकार प्रभावित किया है, किस तरह के भाषायी परिवर्तन सामने आए हैं, देवनागरी लिपि के समक्ष कौन-सी चुनौतियाँ उत्पन्न हुई हैं तथा डिजिटल युग में हिंदी के भविष्य की

संभावनाएँ क्या हैं। यह विश्लेषण किया है, जो भाषा के बदलते स्वरूप, शब्दों के चयन और व्याकरणिक त्रुटियों को समझने के लिये विश्लेषित किया है!

२. साहित्य समीक्षा:

सोशल मीडिया और भाषा के अंतर्संबंधों पर अब तक कई विद्वानों और भाषाविदों ने अपने विचार व्यक्त किए हैं। साहित्य समीक्षा के मुख्य बिंदु इस प्रकार हैं:

1. डा0 प्रियंका रानी (2022), सोशल मीडिया पर हिंदी भाषा की स्थिति इस विषय पर शोध-पत्र लिखा है! इस शोध-पत्र मे सोशल मीडिया पर हिंदी भाषा की वर्तमान स्थिति, उसके प्रयोग के पैटर्न, चुनौतियाँ, संभावनाएँ और सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभावों का विश्लेषण किया गया है। शोध में यह पाया गया कि हिंदी का प्रयोग बढ़ रहा है, किन्तु रोमन लिपि का बढ़ता प्रयोग, अंग्रेजी की वर्चस्वशाली स्थिति, तकनीकी सीमाएँ और भाषिक शुद्धता की उपेक्षा इस विकास के मार्ग में बाधाएँ उत्पन्न कर रही हैं। इस शोध-पत्र ने सुझाव दिया है कि हिंदी भाषा की स्थिति को सुदृढ़ करने हेतु तकनीकी नवाचार, नीतिगत हस्तक्षेप और भाषिक साक्षरता को बढ़ावा देना अत्यंत आवश्यक है।
2. हिंग्लिश का समाजशास्त्र: कई शोध पत्रों में उल्लेख है कि हिंग्लिश अब केवल मजबूरी नहीं, बल्कि एक 'स्टेटस सिंबल' और 'युवा पहचान' बन गई है। डॉ. रीता कोठारी जैसे विद्वानों ने हिंग्लिश के सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की है। और प्रो. सुरेश कुमार ने भाषा कि भीतरी परत इस ग्रथ मे हिंग्लिश का प्रयोग स्पष किया है!
3. मधाले, एस. डी.(२०२५) मे बदलती भाषा के प्रचलन एवं कारण का अध्ययन: २१वीं सदी के हिंदी सिनेमा संदर्भ मे शोधपत्र लिखा है! इस शोधपत्र मे २१वीं सदी के हिंदी सिनेमा में भाषा के बदलते प्रचलनों, उनके स्वरूप, और उन्हें प्रेरित करने वाले सामाजिक-सांस्कृतिक-तकनीकी कारकों का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इस शोधपत्र मे भाषाई परिवर्तन के सिद्धांतों के आधार पर हिंदी फिल्मों में बोलचाल की हिंदी, अंग्रेजी के बढ़ते सम्मिश्रण (कोड-मिक्सिंग), हिंग्लिश के उदय, क्षेत्रीय भाषाओं के प्रभाव, और सोशल मीडिया से उपजी नवीन शब्दावली की पड़ताल करता कि है।

ISSN (Online): Applied For

इस शोधपत्र मे शोधकर्ता ने बताया है कि हिंदी सिनेमा की भाषा अब अधिक व्यावहारिक, बहुभाषी और वैश्विक प्रभावों से युक्त हो गई है।

4. दुबे, और प्रीति. (2015). मीडिया में हिंदी का बदलता स्वरूप इस विषय पर शोध किया है! इनोने स्पष किया है कि, हिंदी भाषा तेजी से अंग्रेजी के प्रभाव मे आई है! इस शोधपत्र मे स्पष्ट किया है कि वाक्य-रचना, मुहावरे आदी मे अंग्रेजी का अधिक प्रभाव दिकाई देता है! हिंदी भाषा अब परीवर्तित हो कर एक नई भाषा को जन्म दे राही है!
5. अमित धवन (२०२४) मे आधुनिक हिंदी के विकास के परिमाणीकरण कि और इस विषय पर शोध करणे के लिये इनोने पिछले कुच वर्षे मे प्रतिष्ठित हिंदी समाचार प्रकाशकों द्वारा प्रयुक्त शब्दों की तुलना, इस कार्य के लिए विशेष रूप से निर्मित की गई शब्द-सूची से करते हुए हिंदी भाषा में बीते वर्षों में हुए बदलाव का आकलन किया है। इस अध्ययन से स्पष्ट हो चुका है कि, हिंदी में लिप्यंतरित अंग्रेजी शब्दों और लैटिन लिपि के शब्दों का प्रभाव हुवा है!

३. शोध के उद्देश्य:

किसी भी शोध का आधार उसके उद्देश्य होते हैं। इस लेख के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- सोशल मीडिया के प्रभाव से हिंदी भाषा में आए परिवर्तनों का विश्लेषण करना।
- देवनागरी लिपि के स्थान पर रोमन लिपि (हिंग्लिश) के बढ़ते प्रयोग के कारणों का अध्ययन करना।
- हिंदी भाषा पर सोशल मीडिया के सांस्कृतिक प्रभावों को समझना।
- डिजिटल युग में हिंदी की भविष्य की संभावनाओं का आकलन करना।

४. शोध पद्धति:

वैज्ञानिक पद्धती के बिना कोई भी शोध अधूरा होता है! इसी लिये इस शोध मे 'वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक शोध पद्धति' का प्रयोग किया गया है।

- **प्रदत्त संग्रह:**

  प्राथमिक स्रोत: फेसबुक, एक्स (ट्विटर), और इंस्टाग्राम के विभिन्न हिंदी पेजों और कमेंट अनुभाग का प्रत्यक्ष अवलोकन किया है।

  द्वितीयक स्रोत: भाषा विज्ञान की पुस्तकें, शोध पत्रिकाएँ, समाचार पत्रों के लेख और इंटरनेट पर उपलब्ध सांख्यिकीय आंकड़े द्वितीयक स्रोत मे अपनी गई है।

- **नमूना चयन:** तीनों सोशल मीडिया (फेसबुक, एक्स (ट्विटर), इंस्टाग्राम) प्लेटफॉर्मों से कुल 150 पोस्ट/कमेंट्स (प्रत्येक से 50) का चयन किया गया।
- **विश्लेषण की विधि:** एकत्रित आंकड़ों का गुणात्मक विश्लेषण किया गया है ताकि भाषा के बदलते स्वरूप, शब्दों के चयन और व्याकरणिक त्रुटियों के नमूना को समझा जा सके। गुणात्मक विश्लेषण द्वारा लिपि प्रयोग, भाषा शैली और व्याकरणिक प्रवृत्तियों का अध्ययन किया गया।

५. सोशल मीडिया के प्रभाव से हिंदी भाषा में आए परिवर्तनों का विश्लेषण:

इस अध्ययन के अंतर्गत फेसबुक, एक्स (ट्विटर) और इंस्टाग्राम पर हिंदी पोस्ट एवं कमेंट्स का प्रत्यक्ष अवलोकन किया गया! वाह निम्नलिखित है!

तालिका 1 : अवलोकित पोस्ट/कमेंट्स का प्लेटफॉर्मवार वितरण

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म	**अवलोकित पोस्ट/कमेंट्स**
फेसबुक	50
एक्स (ट्विटर)	50
इंस्टाग्राम	50
कुल	**150**

तालिका 1 मे फेसबुक, एक्स (ट्विटर) और इंस्टाग्राम पर हिंदी पोस्ट एवं कमेंट्स का प्रत्यक्ष अवलोकन करणे के लिये चयन किया गया है, ताकि परिणाम संतुलित और तुलनात्मक रूप से प्राप्त किए जा सकें।

ISSN (Online): Applied For

तालिका 2 : प्रयुक्त लिपि के आधार पर वर्गीकरण

लिपि का प्रकार	पोस्ट/कमेंट्स की संख्या	प्रतिशत (%)
देवनागरी लिपि	34	22.66%
रोमन लिपि (हिंग्लिश)	64	42.66%
मिश्रित (देवनागरी + अंग्रेजी)	52	34.67%
कुल	**150**	**100%**

तालिका 2 से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक ४२.६६% पोस्ट/कमेंट्स रोमन लिपि (हिंग्लिश) में लिखे गए थे। और केवल २२.६६% सामग्री देवनागरी लिपि में थी, जबकि ३४.६७% में मिश्रित भाषा का प्रयोग पाया गया। इससे याह स्पष्ट होता है कि, सोशल मीडिया का प्रभाव हिंदी भाषा पर दिखाई देता है. सोशल मीडिया मे केवळ २२.६६% देवनागरी लिपी का प्रयोग किया गया है. इससे यह स्थिति देवनागरी लिपि के समक्ष उत्पन्न हो रहे संकट की ओर संकेत करती है।

तालिका 3 : भाषा शैली के आधार पर वर्गीकरण

भाषा शैली	पोस्ट/कमेंट्स की संख्या	प्रतिशत (%)
शुद्ध हिंदी	37	24.67%
हिंग्लिश (हिंदी + अंग्रेजी)	92	61.33%
मुख्यतः अंग्रेजी	21	14.00%
कुल	**150**	**100%**

तालिका 3 से ज्ञात होता है कि सोशल मीडिया पर हिंदी का प्रयोग मुख्यतः हिंग्लिश (६१.३३%) रूप में हो रहा है। याह स्पष्ट करता है कि, हिंदी भाषा कि जगह हिंग्लिश भाषा ने ले ली है! शुद्ध हिंदी का उपयोग अपेक्षाकृत कम (२४.६७%) पाया गया, जो शुद्ध हिंदी भाषा के प्रभाव और हिंदी भाषा के पतन को दर्शाता है।

ISSN (Online): Applied For

तालिका 4 : व्याकरणिक एवं वर्तनी संबंधी त्रुटियाँ

त्रुटि का प्रकार	उदाहरणात्मक प्रवृत्ति	पोस्ट/कमेंट्स की संख्या
वर्तनी त्रुटि	"muje" (mujhe), "kyu" (kyun), "vaps" (wapas), "kb" (kab), "kho" (kaho)	41
क्रिया रूप त्रुटि	"kar raha hu" (लिंग भेद की अनदेखी - उदा. स्त्री द्वारा पुल्लिंग क्रिया का प्रयोग)	51
विराम चिह्नों की कमी	बिना पूर्णविराम या प्रश्नवाचक चिह्न के वाक्य	82
वाक्य संरचना दोष	"tum kaha ja rahe ho" "kon karta hai" (बिना उचित सहायक क्रिया),	38
कोड-मिक्सिंग	"Aaj weather बहुत awesome है", "तुम बहुत bountiful हो", मै back आऊंगा" (अत्यधिक अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग)	70
ध्वन्यात्मक लेखन	"gharrrr", "plzzzz", "nooooo", " haaaa", "abbbbb" (अक्षरों की पुनरावृत्ति)	47
संक्षिप्तीकरण	"gn" (Good Night), "tc" (Take Care), "hru" (How are you), plz (Please)	72
कारक संबंधी त्रुटि	"मैंने जाना है" (मुझे जाना है की जगह), "मै जाऊ राहा" (मै जा राहा हु कि जगह)	20

तालिका 4 से स्पष्ट है कि सोशल मीडिया पर भाषा की शुद्धता पर अपेक्षाकृत कम ध्यान दिया जाता है। तेज संचार की प्रवृत्ति के कारण वर्तनी और व्याकरणिक त्रुटियाँ सामान्य हो गई हैं। सबसे अधिक त्रुटि 'विराम चिह्नों' 'कोड-मिक्सिंग' और संक्षिप्तीकरण में देखी गई

ISSN (Online): Applied For

है, जो यह दर्शाता है कि सोशल मीडिया पर लोग व्याकरण की तुलना में गति को अधिक महत्व देते हैं। "plzzzz", “nooooo” जैसे ध्वन्यात्मक शब्दों का उपयोग भावनाओं की तीव्रता दिखाने के लिए किया जाता है। संक्षिप्तीकरण का बढ़ता उपयोग भाषाई शुद्धता को कम कर रहा है लेकिन संचार को तेज़ बना रहा है।

तालिका 5 : भाव-चिह्न (Emoji) का प्रयोग

प्रयोग की स्थिति	पोस्ट/कमेंट्स की संख्या	प्रतिशत (%)
इमोजी सहित	106	71%
बिना इमोजी	44	29%
कुल	**150**	**100%**

तालिका 5 : भाव-चिह्न (Emoji) का प्रयोग दर्शाता है! ७१.% पोस्ट/कमेंट्स में इमोजी का प्रयोग किया गया, जैसे 🙏 / 🙌 – धन्यवाद, 😆 / 😄- मुस्कान, 😔 / 😢- उदासी आदि का प्रयोग जादा तौर पार किया गया है! जिससे यह स्पष्ट होता है कि भाव-चिह्न अब भाषा के पूरक माध्यम बन चुके हैं।

६. हिंदी भाषा में आए प्रमुख परिवर्तन

सोशल मीडिया के व्यापक उपयोग के परिणामस्वरूप हिंदी भाषा में अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तन दृष्टिगोचर होते हैं। यह परिवर्तन शब्द-रचना, वाक्य-संरचना, अभिव्यक्ति की शैली तथा संप्रेषण की गति—सभी स्तरों पर दिखाई देते हैं। प्रमुख परिवर्तन निम्नलिखित हैं:

संक्षिप्तता: सोशल मीडिया की त्वरित और सीमित स्थान वाली प्रकृति के कारण भाषा में संक्षिप्तता का चलन बढ़ा है। उपयोगकर्ता लंबे वाक्यों के स्थान पर छोटे शब्दों और संक्षिप्त रूपों का प्रयोग करने लगे हैं। जैसे ठीक है- ok, धन्यवाद- thx, काय कर रहे हो- kya kr rhe ho , शुभ प्रभात- gm आदि. यह प्रवृत्ति समय की बचत और त्वरित संवाद की आवश्यकता से उत्पन्न हुवा प्रभाव दर्शाता है। यद्यपि इससे संप्रेषण सरल हुआ है, किंतु इससे भाषा की शुद्धता और औपचारिकता में कमी भी देखी जाती है। पारंपरिक

ISSN (Online): Applied For

व्याकरणिक संरचना का ह्रास हो रहा है और भाषा अधिक बोलचाल की बनती जा रही है।

नए शब्दों का निर्माण: सोशल मीडिया ने हिंदी में नए शब्दों और क्रियाओं के निर्माण को बढ़ावा दिया है। अंग्रेज़ी शब्दों को हिंदी क्रियाओं में परिवर्तित कर प्रयोग किया जाने लगा है। जैसे कि लाईक करना- Like, शेयर करना- Share , ब्लॉक करना- Block , किसी कि ऑनलाइन आलोचना या मजाक उड़ाना- Viral, किसी खबर का जंगल की आग की तरह फैलना- Troll आदि. यह प्रयोग भाषायी नवाचार का उदाहरण है, जहाँ तकनीकी शब्दावली को हिंदी व्याकरण में ढाला जा रहा है। इससे हिंदी अधिक आधुनिक और तकनीकी संदर्भों में सक्षम हुई है। हालांकि, इसके परिणामस्वरूप शुद्ध हिंदी शब्दों का प्रयोग कम होता जा रहा है!

इमोजी का प्रयोग: सोशल मीडिया पर भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए इमोजी का व्यापक प्रयोग किया जाता है। इमोजी अब शब्दों का स्थान लेने लगे हैं। जैसे 🙏 / 🙌 – धन्यवाद, 😊 / 😄- मुस्कान, 😔 / 😢- उदासी, 👍- प्रशंसा, 😠-क्रोध आदी. इमोजी ने भाषा को दृश्यात्मक बना दिया है। इससे भावनाओं को सरल और शीघ्र व्यक्त करना संभव हुआ है। किंतु यह भी देखा गया है कि युवा वर्ग शब्दों के स्थान पर केवल इमोजी से संवाद करने लगा है, जिससे भाषिक अभिव्यक्ति की क्षमता सीमित हो सकती है। भाषा के बौद्धिक स्तर पर इसका प्रभाव पड़ने की संभावना है।

अनौपचारिक शैली: सोशल मीडिया की भाषा अत्यधिक अनौपचारिक हो गई है। सम्मानसूचक शब्दों और औपचारिक वाक्य संरचनाओं का प्रयोग कम हो गया है। जैसे आप कैसे हैं?- kya haal hai, कृपया उत्तर दें- reply karo, धन्यवाद- thx / thanx आदि शब्दों का प्रयोग बड गया है! यह परिवर्तन सामाजिक दूरी को कम करता है और संवाद को मित्रवत बनाता है। परंतु इससे भाषा की गरिमा और शिष्टाचार में कमी देखी जाती है। औपचारिक हिंदी का प्रयोग केवल सरकारी दस्तावेजों और शैक्षणिक लेखन तक सीमित होता जा रहा है।

मिश्रित भाषा (हिंग्लिश का प्रभाव): हिंदी और अंग्रेज़ी के मिश्रण से बनी 'हिंग्लिश' सोशल मीडिया की प्रमुख भाषा बनती जा रही है। जैसे—"आज बहुत boring day था।", "यह movie बहुत amazing है।", "डीएम' (DM) करना", चलो कहीं outstation चलते हैं।", "आज का **weather** बहुत **awesome** है" आदि हिंग्लिश भाषा का प्रभाव दिख राहा है! यह हिंग्लिश का प्रयोग युवा वर्ग में पहचान का प्रतीक बन गया है। यह वैश्वीकरण और तकनीकी प्रभाव का परिणाम है। इससे एक ओर संप्रेषण सरल हुआ है, वहीं दूसरी ओर शुद्ध हिंदी के प्रयोग में गिरावट आई है।

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि सोशल मीडिया ने हिंदी भाषा को अधिक सरल, संवादात्मक और तकनीकी बना दिया है। संक्षिप्त रूपों, नए शब्दों, इमोजी और अनौपचारिक शैली ने भाषा को आधुनिक रूप प्रदान किया है, किंतु इसके साथ-साथ शुद्धता, व्याकरणिक अनुशासन और साहित्यिक सौंदर्य पर नकारात्मक प्रभाव भी पड़ा है। यह परिवर्तन भाषा के विकास का स्वाभाविक चरण है, जिसे संतुलन के साथ अपनाने की आवश्यकता है।

७. हिंदी भाषिक चुनौतियाँ

सोशल मीडिया ने जहाँ हिंदी भाषा के प्रसार और लोकप्रियता को बढावा दिया है, वहीं दुसरे और, इसके कारण कई भाषिक चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं। ये चुनौतियाँ भाषा की लिपि, संरचना, शब्दावली तथा औपचारिक प्रयोग—सभी स्तरों पर देखी जा सकती हैं।

देवनागरी लिपि का सीमित प्रयोग: हिंदी एक मूल देवनागरी लिपि है, किंतु सोशल मीडिया पर रोमन लिपि (हिंग्लिश) का प्रयोग अधिक प्रचलित और लोकप्रिय हो गया है। आज के युवा वर्ग मोबाइल कीबोर्ड, तकनीकी सुविधा और अंग्रेज़ी शिक्षा के प्रभाव के कारण देवनागरी के स्थान पर रोमन लिपि को प्राथमिकता और इस्तीमाल कर रहे है। इससे देवनागरी लिपि के अभ्यास में कमी आ रही है और वर्तनी संबंधी समस्याएँ बढ़ रही हैं। दीर्घकालिक दृष्टि से यह प्रवृत्ति हिंदी की लिपि-परंपरा के लिए संकट उत्पन्न कर सकती है।

भाषा की शुद्धता में गिरावट: सोशल मीडिया की त्वरित और अनौपचारिक प्रकृति के कारण सोशल मीडिया का भाषा की शुद्धता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। आज के युवा

व्याकरणिक नियमों, वर्तनी और वाक्य-विन्यास की उपेक्षा करते हुए संवाद करते हैं। अशुद्ध रूपों, संक्षिप्त शब्दों और अपूर्ण वाक्यों का अत्यधिक प्रयोग सामान्य हो गया है, जैसे—“आप क्या कर रहे हैं?” के स्थान पर “kya kr rhe ho” इस प्रवृत्ति से शुद्ध भाषा प्रयोग की प्रवृत्ति घटती जा रही है और भाषा का मानक स्वरूप कमजोर होता जा रहा है।

शब्दावली का अत्यधिक अंग्रेज़ीकरण: आज सोशल मीडिया पर प्रयुक्त हिंदी में अंग्रेज़ी शब्दों का अत्यधिक समावेश देखने को मिलता है, जैसे— लाइक करना, शेयर करना, फॉलो करना, पोस्ट करना आदि। इससे हिंदी की मौलिक शब्दावली का स्थान अंग्रेज़ी मूल के शब्द लेने लगे हैं।
जहाँ यह प्रवृत्ति भाषा को तकनीकी संदर्भों में सक्षम बनाती है, वहीं दूसरी ओर इससे हिंदी के पारंपरिक शब्द धीरे-धीरे अप्रचलित होते जा रहे हैं। उदाहरणस्वरूप, “साझा करना” के स्थान पर “शेयर करना” और “प्रतिक्रिया” के स्थान पर “कमेंट” का प्रयोग सामान्य होता जा रहा है।

औपचारिक हिंदी का सीमित क्षेत्र: सोशल मीडिया की भाषा रूप मुख्यतः अनौपचारिक और संवादात्मक है। परिणामस्वरूप औपचारिक हिंदी का उपयोग केवल शैक्षणिक लेखन, सरकारी दस्तावेजों और औपचारिक भाषणों तक सीमित रह गया है। दैनिक डिजिटल संवाद में शिष्टाचारयुक्त और मानक हिंदी के प्रयोग में कमी आई है। इससे भाषा की गरिमा और साहित्यिक परंपरा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है तथा औपचारिक हिंदी और जनभाषा के बीच की दूरी बढ़ती जा रही है।

इन हिंदी भाषिक चुनौतियों से स्पष्ट होता है कि सोशल मीडिया ने हिंदी भाषा को व्यापक मंच तो प्रदान किया है, किंतु इसके साथ-साथ लिपि-संरक्षण, शुद्धता और शब्द-संपदा से संबंधित समस्याएँ भी उत्पन्न की हैं। अतः आवश्यकता इस बात की है कि तकनीकी सुविधा और भाषिक परंपरा के बीच संतुलन स्थापित किया जाए, जिससे हिंदी का विकास भी हो और उसका मूल स्वरूप भी सुरक्षित रह सके।

८. हिंदी का भविष्य

इन चुनौतियों के बावजूद, सोशल मीडिया हिंदी के लिए एक वरदान भी साबित हुआ है।

- **सामग्री निर्माण:** आज दुनिया के सबसे बड़े यूट्यूबर्स हिंदी में वीडियो बनाते हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि हिंदी एक व्यावसायिक रूप से सफल भाषा है।
- **यूनिकोड का उपयोग:** गूगल और अन्य टेक कंपनियों द्वारा देवनागरी कीबोर्ड और वॉयस टाइपिंग की सुविधा देने से अब लोग फिर से देवनागरी लिपि की ओर लौट रहे हैं।

सोशल मीडिया और डिजिटल तकनीक ने हिंदी भाषा के समक्ष केवल चुनौतियाँ ही नहीं, बल्कि अनेक नई संभावनाएँ भी प्रस्तुत की हैं। यदि इन संभावनाओं का संतुलित और योजनाबद्ध उपयोग किया जाए, तो हिंदी भाषा का भविष्य अधिक सुदृढ़, व्यापक और प्रभावशाली हो सकता है।

डिजिटल शिक्षा में हिंदी का विस्तार करणा: भविष्य में यदि शैक्षणिक सामग्री जैसे-ई-पुस्तकें, वीडियो व्याख्यान, ऑनलाइन पाठ्यक्रम आदि हिंदी में अधिक मात्रा में उपलब्ध कराई जाए, तो डिजिटल शिक्षा के क्षेत्र में हिंदी का व्यापक विस्तार संभव है।

वॉयस टाइपिंग से देवनागरी का पुनरुत्थान: आज वॉयस टाइपिंग, स्पीच-टू-टेक्स्ट और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आदि तकनीकी प्रगति आधारित भाषा का विकास हुआ है। इन तकनीकों के माध्यम से अब हिंदी में बोलकर सीधे देवनागरी लिपि में लिखना संभव हो गया है। भविष्य में यह तकनीक रोमन लिपि पर निर्भरता को करके देवनागरी लिपि के प्रयोग को पुनर्जीवित कर सकती है। इस प्रकार तकनीक हिंदी की मूल लिपि के संरक्षण में सहायक सिद्ध हो सकती है।

क्षेत्रीय भाषाओं और बोलियों का संरक्षण: सोशल मीडिया ने बहुभाषिकता जैसी क्षेत्रीय बोलियों को डिजिटल मंच प्रदान किया है। भविष्य में यह सोशल मीडिया इन भाषाओं के संरक्षण और प्रचार का सशक्त माध्यम बन सकता है। यदि लोकगीत, कहावतें, लोककथाएँ और सांस्कृतिक परंपराएँ डिजिटल रूप में संकलित की जाएँ, तो वे अगली पीढ़ी के लिए संरक्षित रह सकेंगी।

ISSN (Online): Applied For

हिंदी सामग्री निर्माण से रोजगार के अवसर: डिजिटल माध्यमों पर हिंदी सामग्री की मांग लगातार बढ़ रही है। यूट्यूब चैनल, पॉडकास्ट, ब्लॉग, ऑनलाइन समाचार पोर्टल और सोशल मीडिया पेजों पर हिंदी सामग्री का व्यापक उपभोग हो रहा है। इससे लेखकों, अनुवादकों, शिक्षकों, पत्रकारों और सामग्री निर्मेता के लिए नए रोजगार के अवसर उत्पन्न हो रहे हैं।

९. निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि सोशल मीडिया ने हिंदी भाषा के स्वरूप, प्रयोग और प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सोशल मीडिया के माध्यम से हिंदी भाषा अधिक व्यापक, संवादात्मक और वैश्विक बन गई है। संक्षिप्तता, हिंग्लिश, इमोजी संस्कृति और अनौपचारिक शैली जैसे तत्वों ने हिंदी के पारंपरिक रूप को नई दिशा प्रदान की है। अध्ययन के परिणाम यह दर्शाते हैं कि युवा वर्ग में रोमन लिपि (हिंग्लिश) का प्रयोग देवनागरी की तुलना में अधिक प्रचलित हो गया है, जिससे लिपि-संरक्षण की समस्या उत्पन्न हुई है। इसके साथ ही शब्दावली के अत्यधिक अंग्रेज़ीकरण और व्याकरणिक शिथिलता ने भाषा की शुद्धता को प्रभावित किया है। औपचारिक हिंदी का प्रयोग सीमित क्षेत्रों तक सिमटता जा रहा है, जो भाषा की गरिमा और साहित्यिक परंपरा के लिए चिंता का विषय है।

दूसरी ओर, सोशल मीडिया ने क्षेत्रीय बोलियों को मंच प्रदान कर भाषिक विविधता को सुदृढ़ किया है। भोजपुरी, अवधी, ब्रज और मारवाड़ी जैसी बोलियाँ डिजिटल माध्यमों से पुनः सक्रिय हो रही हैं, जिससे सांस्कृतिक पुनर्जीवन और भाषिक आत्मसम्मान को बल मिला है। साथ ही, डिजिटल शिक्षा, वॉयस टाइपिंग तकनीक और हिंदी सामग्री निर्माण ने भाषा के लिए नए अवसर भी उत्पन्न किए हैं।

समग्र रूप से यह कहा जा सकता है कि सोशल मीडिया का प्रभाव हिंदी भाषा पर न तो पूर्णतः नकारात्मक है और न ही पूर्णतः सकारात्मक, बल्कि यह एक द्वंद्वात्मक प्रक्रिया है। यह भाषा को सरल और आधुनिक बनाता है, किंतु साथ ही उसकी शुद्धता और मूल स्वरूप के समक्ष चुनौतियाँ भी प्रस्तुत करता है। अतः आवश्यक है कि तकनीकी प्रगति

ISSN (Online): Applied For

और भाषिक परंपरा के बीच संतुलन स्थापित किया जाए। यदि डिजिटल माध्यमों का विवेकपूर्ण उपयोग किया जाए, तो हिंदी भाषा न केवल अपनी सांस्कृतिक अस्मिता बनाए रख सकेगी, बल्कि वैश्विक स्तर पर अपनी सशक्त उपस्थिति भी दर्ज करा सकेगी।

१०. ग्रंथ सूची

१. डा0 प्रियंका रानी. (2022). सोशल मीडिया पर हिंदी भाषा की स्थिति. *Ldealistic Journal of Advanced Research in Progressive Spectrums (IJARPS) eISSN– 2583-6986*, *1*(05), 4–12.

२. Madhale, S. D. (2025). A Study of Changing Language Trends and Their Causes: In the Context of 21st Century Hindi Cinema: बदलती भाषा के प्रचलन एवं कारण का अध्ययन: २१वीं सदी के हिंदी सिनेमा संदर्भ में. *Research Review Journal of Social Science*, *5*(1), 293-299.

३. दुबे, और प्रीति. (2015). मीडिया में हिंदी का बदलता स्वरूप.

४. Sharma, R. D. (2012). *Bhasha Ki Bheetari Parten*. Vani Prakashan.

५. धवन ए. (2024). आधुनिक हिंदी के विकास के परिमाणीकरण की ओर: प्रतिष्ठित डिजिटल समाचार प्रकाशकों द्वारा हिंदी के प्रयोग का कालानुक्रमिक विश्लेषण.

६. कुमार स. (2018). सोशल मीडिया मे हिन्दी के प्रभाव पर अध्ययन. *Universal Research Reports*, *5* (1), 230–235.